बिना त्याग वृत्ति के भाग्य नहीं

दुनिया में सोशल वर्कर्स बहुत होते हैं। मैं भी सोशल वर्कर था। ज़रूरतमंद लोगों की सेवा करता था। समाज में बड़ा ही मान-सम्मान, आदर-सत्कार प्राप्त होता था। किंतु एक बार मैं गर्मियों के दिन में एक रास्ते से जा रहा था, वहाँ रास्ते में एक गरीब महिला प्याऊ लगाकर बैठी हुई थी, वो राहगीरों को मटके का शीतल जल पिलाती थी। मैं भी वहाँ रुका और मैंने भी वो शीतल जल पिया। माता गरीब थी, लेकिन चेहरे पर बड़ी रौनक और सुखद झलक दिखती थी। मैंने पूछा, माता जी, ये पानी कैसे लाती हो? उन्होंने कहा कि पास में थोड़ी दूर पर एक कुआं है, वहाँ से मैं सींच के ले आती हूँ और जो प्यासे मेरे पास आते हैं उनको पिला देती हूँ। ऐसे में मैंने कहा कि पानी लाने का प्रबंध मैं करवा देता हूँ, और आप सभी राहगीरों को पानी पिलाते रहना। इतना कहते ही उस बूढ़ी माता ने तुरंत बड़े फलक से कहा, नहीं...नहीं...नहीं। मैंने पूछा क्यों माता जी? तो उनका जवाब था, मैं स्वयं ही सींच कर लोगों को पानी पिलाती हूँ। तो मैंने कहा, आपको धूप में जाना-आना नहीं पड़ेगा, मैं प्रबंध करता हूँ। तो उन्होंने कहा कि मैं सेवा करती हूँ, सेवा में हमारा त्याग होना चाहिए। माना कुछ स्वयं को कसना चाहिए। ये जवाब सुनकर मैं हैरान था। वो वही बोलते हुए नहीं रुकी, उन्होंने मुझे बताया कि सेवा में अगर त्याग नहीं होता तो पुण्य जमा नहीं होता। ये सुनकर मैं हक्का बक्का रह गया! मैंने सोचा, ये बूढ़ी माता इतनी ऊँची सोच लिए कर्म कर रही है! कर्म में त्याग की भावना से ही पुण्य जमा होता है, ये बात मुझे समझ में आई।

- ब्र. कु. गंगाधर

मैंने ब्रह्माकुमारी संस्थान में आने के बाद एक बहुत सुंदर बात देखी कि जब भी कहीं सेवा के लिए जाते हैं तो वहाँ पर विशेष रूप से परमात्मा का मेडिटेशन कक्ष बना रहता है। जब भी सेवा में जायेंगे तो वहाँ पहले परमात्मा के कमरे में जाते हैं, कुछ क्षण मेडिटेशन करते हैं फिर सेवा में जाते हैं। मैं भी जब यहाँ से जुड़ा तो मैं भी ऐसा ही करने लगा। यहाँ ऐसा मेडिटेशन करने के पीछे भाव यही होता है कि मैं तो एक निमित्त हूँ, बाबा(परमात्मा), आपकी सेवा है, आपको कराना है। ये त्याग की जो वृत्ति है, इससे सेवा का मीठा फल प्राप्त होता है।

यहाँ बाबा को याद करते हुए कार्य करते हैं और बाबा को याद करके कार्य शुरु करते हैं और यह समझते हैं कि बाबा ही यह कार्य कराते हैं, हम तो निमित्त हैं। बाबा ने ही इस आत्मा को भेजा है। बाबा ने ही इस सेंटर को खोला है, हमें तो साकार में निमित्त बनाया है। बोलने वाला, देने वाला तो वही है। अगर यह बात हम समझते हैं तो फटाफट सफलता मिल जाती है। अगर हम यह समझते हैं कि हम तो समझाने में बड़े कुशल हैं, सबलोग मुझे कहते हैं कि आप तो बहुत बढ़िया समझाते हैं, हम ही समझाने वाले हैं, हमें खास कहा गया है। ऐसे में हम शिव बाबा को एक तरफ रख देते हैं और अपने आप को बहुत कुछ समझ बैठते हैं। तो शिव बाबा भी सामने से हट जाता है और जिज्ञासु के सामने से भी शिव बाबा हटकर हमारा ही हड्डी मांस वाला पुतला उसे दिखाई पड़ता है। फिर बाबा भी कहते हैं, ठीक है, आगे बढ़ो। उसका नतीजा हम देखते हैं कि हम पत्थर के साथ सिर मारते हैं। अर्थात् खुद को देह समझकर और सामने वाले को भी देह समझकर समझाते हैं। फिर पत्थर पिघलता नहीं, मूर्ति बनती नहीं। थोड़े दिन तक वो क्लास में आयेगा, उसके बाद एक दिन गायब हो जायेगा। हम कहना शुरु करते हैं कि पता नहीं, आजकल फलाना भाई या बहन आते नहीं, पता नहीं क्या हो गया! उसकी वजह यही होती है कि हम बाबा को बीच में रखकर ज्ञान नहीं सुनाते हैं। अपने को रख समझाते हैं, इसलिए वह थोड़ा समय के लिए जबतक आपका प्रभाव रहेगा तब तक आयेगा, बाद में छोड़कर चला जाता है। हमने उसे बाबा का भेजा हुआ जिज्ञासु न समझकर, मान और शान में आकर उसको ज्ञान सुनाया, अपनी इच्छाओं और तृष्णाओं में आ गये। 'मैं भी हूँ कुछ' इस मैं पन में आ गये। सेवा-अभिमान में आ गये। तो बाबा कहेगा कि मेरे बच्चे ज्ञानी, योगी, त्यागी होने के बावजूद देह-अभिमान में आ गये, तो प्राप्ति खत्म, अपनी और दूसरों की भी। इसलिए बाबा कहते हैं, ज्ञान सुनाते-सुनाते सदा बाबा-बाबा कहते रहो ताकि हमारा अभिमान टूटे। बाबा-बाबा कहते हमारी आँखें गीली हो जाएं और हमारा मन प्रफुल्लित हो जाये। उस भावना में आकर, उस स्थिति में आकर जब हम किसी को ज्ञान देते हैं तो सुनने वाला भी बाबा को समझेगा और अपना जन्म-जन्मांतर का भाग्य बनाकर लेगा तथा आपका भी भाग्य बन जायेगा। कहने का भाव यही है कि सेवा के साथ-साथ हमारे में त्याग और तपस्या की भावना होनी चाहिए। सिर्फ त्याग नहीं, त्याग वृत्ति होनी चाहिए कि हमें कुछ नहीं चाहिए। बाबा मिल गया तो सबकुछ मिल गया। आप कुछ देना चाहते हैं तो अन्य किसी को दीजिए, मुझे चाहिए तो केवल एक योगी जीवन चाहिए, और कुछ नहीं। मुझे सिर्फ बाबा का प्यार चाहिए, आशीर्वाद चाहिए। और कुछ नहीं। यह भावना जब आयेगी तब आप समझो कि हम सच्चे योगी हैं, तपस्वी हैं। सेवा में अगर त्याग वृत्ति और निमित्त भाव न हो, तो उस सेवा में सफलता नहीं मिलती। सेवा माना त्याग, और त्याग से ही पुण्य जमा होता और उससे ही हम भाग्यशाली बनते। ये पुण्य की परिभाषा की विधि परमात्मा ने यहाँ हमें सिखाई। हमारा यहाँ सब्जेक्ट ही है, ज्ञान योग धारणा और सेवा।

विचार सागर मंथन से राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी

विचार सागर मंथन करना मुझे तो बहुत अच्छा लगता है, इससे बहुत फायदा है। सबसे बड़ा फायदा कि किन्हीं और विचारों में लटकेंगे, अटकेंगे नहीं। सागर को मंथन करने से मोती मिलते हैं। ऊपर-ऊपर से करेंगे तो सिर्फ कौड़ियाँ ही मिलती हैं, वह भी सच्ची होती हैं। पैसा झूठा हो सकता है, नोट दूसरा हो सकता है, लेकिन कौड़ी झूठी नहीं हो सकती है। शंख जो होता है वो सागर की रचना है इसलिए उसकी आवाज़ कितनी दूर-दूर तक गूंजती है। विचार सागर मंथन से लगेगा यह सागर की रचना है। कोई और बात का विचार न अपने लिए आता है, न किसी के लिए आता है। शांत रहने से कुछ अच्छा माल मिलता है, वायब्रेशन्स मिल जाते हैं। सोचने से नहीं मिलता है, इसलिए मैं अपने को इन सबसे फ्री रखती हूँ। मेरी दिल होती है आप भी बार-बार मीटिंग नहीं करो। हाँ, फैमिली फीलिंग की मीटिंग ज़रूरी है। विचार सागर मंथन करके प्रैक्टिकल जीवन के परिवर्तन से नवीनता का अनुभव करो। मेरे में नवीनता आयेगी तो औरों को प्रेरणा मिलेगी। यह गुप्त बात है। अगर हम अभी करेंगे ना, भले पहले इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, बाबा रहमदिल है, फ्राकदिल है उसका फायदा लो। विचार सागर मंथन जल्दी-जल्दी में नहीं होता है, विचार सागर मंथन करने से राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, यह भी भाग्य है। इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी। अगर ज़रा भी मैं दुःख महसूस करने वाली आत्मा हूँ, तो मैं दूसरे का दुःख दूर नहीं कर सकती हूँ। लाइट रहने से औरों को लाइट अनुभव होगी, हल्कापन लगेगा। 5 हो, 50 हो या 500 हो, पर बाबा की लाइट लाखों करोड़ों को मिल रही है। कोई बीमारी है तो आश्चर्य नहीं खाना है, यह क्यों? यह हिसाब-किताब सतयुग में नहीं होगा, दवाई है, इसलिए क्यों नहीं कहो। आयी है, पास हो जायेगी, अगर बीमारी को सोचते हैं तो बैठ जाती है, जाती नहीं है। कई हैं जो कई डॉक्टर और दवाइयाँ बदलते रहते हैं, बहुत खर्चा करने के बाद भी कुछ नहीं होता है, पर कोई हैं जो बीमारी को खुद ही भगा लेते हैं। बाबा को सर्जन के रूप में देखो, वो जाने उसका काम जाने, वह इंजेक्शन लगा करके अशरीरी बना देता है।

कोई बीमारी है तो आश्चर्य नहीं खाना है, यह क्यों? यह हिसाब-किताब सतयुग में नहीं होगा, दवाई है, इसलिए क्यों नहीं कहो। आयी है, पास हो जायेगी, अगर बीमारी को सोचते हैं तो बैठ जाती है, जाती नहीं है।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

प्रवृत्ति में रहते ब्रह्मा बाप समान बेफिकर बादशाह रहो

आजकल के ज़माने में प्रवृत्ति में एक फिक्र जाता है, तो दस आते हैं लेकिन वह हमारे लिए नहीं हैं, क्योंकि हमारे पास आया, हमने बाबा को दे दिया बस। हम बेफिक्र बादशाह। दिल से दिया, दिल से बाबा को साथी बनाया तो कोई फिक्र नहीं। आप कहेंगे शिवबाबा तो है निराकार, हम तो साकार में हैं, लेकिन ब्रह्मा बाबा भी तो हमारे जैसा ही साकार था। अन्तिम जन्म था, आयु भी वानप्रस्थ अवस्था की थी, सब अनुभव था, व्यापार का, प्रवृत्ति का, भक्ति का...सब अनुभव था। ब्रह्मा बनने के बाद भी कितनी आत्माओं के जीवन की ज़िम्मेवारी थी, फिर भी बेफिक्र रहे। और यह नया क्रान्तिकारी कार्य था, उस समय दुनिया के आगे यह एक चैलेंज थी। पवित्रता की बात, जो लोगों के लिए असम्भव थी, कहते थे आग और कपूस साथ कैसे रह सकते हैं। साथ रहें और विकारों की आग न लगे, यह तो असम्भव है। तो आप सोचो बाबा के सामने कितने विघ्न आये होंगे! फिर भी बाबा बेफिकर बादशाह। ऐसे बाबा कहते बच्चे फॉलो करो। जब भी ऐसी कोई बात आती है तो ब्रह्मा बाबा का सैम्पुल सामने देखो। हमने बाबा को बचपन से देखा है, कभी भी बाबा के चेहरे पर फिकर की लहर नहीं देखी। बाबा को दो शब्द बहुत पक्के थे - बच्चे, नथिंग न्यू। दूसरा - यही शब्द बाबा के मुख पर था - बच्ची, ज़िम्मेवारी शिव बाबा की है, हम तो निमित्त हैं। बाबा बैठा है। कुछ भी ऐसी बात हो जाये तो बाबा कहता बच्ची, इसमें भी अच्छाई भरी हुई है। मानो कुछ बुरा भी हो गया और हो रहा है लेकिन फिर भी बाबा कहते थे जो हो रहा है वो अच्छा, और जो हो गया है वो बहुत अच्छा, और जो होने वाला है वो और ही बहुत-बहुत अच्छा। यह बाबा का स्लोगन था। बाबा बुराई से भी अच्छाई निकाल, नेगेटिव को भी पॉज़ीटिव नज़र से देखते थे। कोई नेगेटिव बात हो गई या मन में आ गई, तो कहते हैं यह तो बुरा हो गया, शिवबाबा तो भूल गया। उसी को ही सोचने में लग जाते हैं। लेकिन ऐसे बुराई में अच्छाई क्या लेनी है, क्यों हुआ यह बुरा, ज़रूर कोई हमारी ही कमज़ोरी का कारण होगा। हमने गलती नहीं की दूसरे ने की, इसलिए इसमें हमारा तो कोई कसूर नहीं है, लेकिन बाबा कहता था अच्छा उसने कसूर किया आपने नहीं किया, इसलिए आप बहुत सच्चे और अच्छे हो लेकिन उसने समझो क्रोध किया और हमने उसके क्रोध को फील किया। मेरे पास फीलिंग की बीमारी आई। तो वह बीमार हुआ क्रोध में और आप बीमार हुए फीलिंग में तब तो मन चल रहा है। अन्दर धारण हुआ, तभी तो आपके मन में क्यों, क्या, संकल्प चल रहे हैं। बाबा का स्लोगन क्या है - न दुःख दो, न दुःख लो। देना तो नहीं है लेकिन दूसरा कोई देता है तो लेना भी नहीं है, तब तो अच्छा-अच्छा हुआ। जो बुरा काम हुआ उसको नेगेटिव से पॉज़ीटिव में परिवर्तन कर उससे शिक्षा ले लो। तो आगे से मुझे अपने में क्या करेक्शन करनी है? यह सोचो तो नेगेटिव भी पॉज़ीटिव हो जायेगा। तो ऐसी बाबा की शिक्षा थी, ब्रह्मा बाबा की प्रैक्टिकल लाइफ थी। तो क्या ऐसा हम अपनी लाइफ में प्रैक्टिकली नहीं कर सकते हैं? बेफिक्र बादशाह हम नहीं बन सकते हैं?

बाबा कहते, जो हो रहा है वो अच्छा, जो हो गया है वो बहुत अच्छा और जो होने वाला है वो और ही बहुत-बहुत अच्छा। बाबा बुराई से भी अच्छाई निकाल, नेगेटिव को भी पॉज़ीटिव नज़र से देखते थे।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

इन्सानी संस्कार पूर्णतः बदलकर देवताई संस्कार बनाना है

ज्ञान का अर्थ ही है पुराने संस्कारों को बदलना। हम संस्कारों को ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। जहाँ परखने की बात है वह तो सहज है। यूँ तो अपने संस्कारों को जान सकते हैं परन्तु फिर भी समझो नहीं पता पड़ता तो जैसे किसके गुण वर्णन करते हैं कि फलाने में यह-यह गुण हैं तो देखना है कि मेरे में वे गुण हैं? इसको कहा जाता है अपने को परखना। अगर मैंने अपने संस्कार को जान लिया तो फिर उसको ज्ञान से परिवर्तन करना है। परिवर्तन किया तो उसको कहा जायेगा रियलाइज़ किया। अगर परिवर्तन नहीं किया तो कहेंगे पूर्ण रूप से रियलाइज़ नहीं हुआ है। जिस संस्कार को मैंने रियलाइज़ किया कि यह ठीक है, वह देखना है सबको ठीक लगता है? यदि औरों को वह ठीक नहीं लगता तो उसे ठीक नहीं कहेंगे। हम देखते हैं यह मेरा संस्कार औरों को रुकावट डालता है तो समझना चाहिए इसको बदलना ज़रूरी है। अब उसको बदलने के लिए ज्ञान की शक्ति चाहिए। एक है अपने से रियलाइज़ करना, दूसरा है कि दूसरे द्वारा रिज़ल्ट में हमें राइट समझना। अगर दूसरे रिज़ल्ट में राइट नहीं समझते हैं तो मैं उसको चेंज करूँ। इसको कहा जाता है रियलाइज़ करना।

हम कौन हैं? हम हैं ब्राह्मण। हम न इंसान हैं, न देवता हैं। इन्सान में सहन करने की शक्ति नहीं है। निंदा, स्तुति, मान-अपमान सहन कर सकेंगे? नहीं। क्योंकि इन्सान अर्थात् देह अभिमान वाले और देवताओं के लिए यह बात है ही नहीं। बात है अब हम ब्राह्मणों की। जैसे देखो, हम कइयों को कहते हैं कि ज्ञान के बिना कोई यह नहीं सोचता कि काम विकार को वृत्ति से ही जीतना है। हम कहते हैं वृत्ति में भी यह संकल्प न उठे क्योंकि देवताओं में यह वृत्ति नहीं है। हम मनुष्य से देवता बनते हैं तो हमारा यह संस्कार पूर्ण रूप से परिवर्तन हुआ ना! बाबा ने युक्ति दी कि ज्ञान सहित भाई-भाई की दृष्टि से देखो तो वृत्ति बदल जायेगी। तो इन्सानी संस्कार को पलटाकर देवताई संस्कार बनायें ना।

अब बाबा हम बच्चों को बहुत सूक्ष्म ले जाता है। बाबा कहते, बच्चे, किसी भी प्रकार की आप में अटैचमेंट नहीं चाहिए। ब्रह्मा बाबा एकदम देह की अटैचमेंट से हम बच्चों को परे ले जाते हैं। देहधारी का सहारा भी नहीं। हम कहते कारोबार में तो एक-दो का सहारा चाहिए ना, परन्तु नहीं। बाबा कहते, बच्चे, इनसे भी परे। क्योंकि बाबा जानते हैं, आत्मा देह में है तो उनका यह संस्कार है। तो बाबा हमें उनसे भी ऊँचा ले जाते कि बच्चे सहारा एक शिव बाबा का। तो देखो, बाबा हमारा यह संस्कार भी बदल देते हैं ना कि किसी भी प्रकार से कोई देहधारी की याद न आये। अभी हमें यह नहीं समझना चाहिए कि मैं पुरुषार्थी हूँ। मैं तो मास्टर सम्पूर्णता का सागर हूँ। मैं तो अब समय के समीप पहुँची हूँ। फरिश्ता स्वरूप मेरे सामने खड़ा है। बाबा हमें उस सीट पर देखना चाहता है।

बाबा एकदम देह की अटैचमेंट से हम बच्चों को परे ले जाते हैं। देहधारी का सहारा बिल्कुल नहीं। कारोबार में भी नहीं।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका